

*[Handwritten signature]*

①



१०७

१। म...  
 ३। न...  
 ४। ल...  
 ५। अ...  
 ६। म...  
 ७। क...  
 ८। म...  
 ९। य...  
 १०। स...  
 ११। म...  
 १२। ज...  
 १३। म...  
 १४। ए...  
 १५। म...  
 १६। अ...  
 १७। म...  
 १८। स...  
 १९। ज...  
 २०। च...  
 २१। अ...  
 २२। स...  
 ललवे ललवन.  
 फूलवन दो ज  
 २३। ल...  
 २४। पा...  
 २५। का...  
 ग...  
 ३। स...  
 ४। अ...  
 ५। र...

(६)

(२)

३३। ल...  
 ३४। र...  
 ३५। म...  
 ३६। अ...  
 ३७। द...  
 ३८। द...  
 ३९। द...  
 ४०। म...  
 ४१। ज...  
 ४२। क...  
 ४३। च...  
 ४४। च...  
 ४५। बि...  
 ४६। ध...  
 ४७। ए...  
 ४८। ना...  
 ४९। फ...  
 ५०। अ...  
 ५१। क...  
 ५२। ए...  
 ५३। म...  
 ५४। ल...  
 ५५। ध...  
 ५६। ध...  
 ५७। भ...  
 ५८। म...  
 ५९। म...  
 ६०। सु...  
 ६१। द...  
 ६२। ग...



33e

राग मल्लार लाल लेला

१२२

गरज गरज धन धन से बहरा करे का ३३ ३

उरावे उं।वे धारी का रो करी माडा कम सुम ॥

चमके चमके चोंके बीज रोशा गरज गरज गर

गगन वा चलत पुरवाई मा कम सुम ॥

राग मेध लाल सदा

उं मरु धन धुं मरु

मा

५

३



श्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वत्यैनमः

रामायन

येरी लाल मिलेरी आनुप सुंदर राजेंद्र राजा राजगन  
बल येरी लालमीले ॥ जेजाकी भावर स्नेवाकीतर अत  
करोरीमन लालमीले ॥ १ ॥

कोय लिया बोलीरे पीहं कवन देसर हि लाच्याये ॥  
दृष्टपदी जबले लालनी उनबिन रही ला नजाय ॥ १ ॥

येरी जोगी का के होवारी वारीवार डारीवाकी सुंदर  
जपमाला पर बलबल हारी येरी जोगी ॥

दिये रामै वारीगी चि का के हुंजर ल रव्याज सिंदर  
की नजर दीये रामै ॥ दूतपूज और अनधन  
ल धुमी निसदिन सांज फेजर ॥ १ ॥

पट लोरे कवन देहों लो रा तुं सुर ग्यान मौं मद  
सा येच तुं बालमवा पट लोरे ॥ होरी जी लोका भइल  
वा सदावंग वी है आलमवा पट लोरे ॥ १ ॥



Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page, featuring a large red circular mark and a blue line crossing through the text.

निरेजम गरे निरे लेलाना  
ओहना ल लेले लान हरे लरे ना ही निध म  
म रे म य रे

५ ४ ५ ३ सा सा ॥ ५ २ ५ ५ सा ध ध  
नौं दों ला नें ॥ तूल कामा दो ला दो दो  
~~दोनो लिल~~  
~~मिरे म म के~~ सा निरि प नि ध ध फ रे सा  
नौं ला लिल ला दे ना ला दो दो म र नौं दो ला  
ने नौं ने दे रे नौं दो दो ला नें



ने वर बाजूरे वाजूरे ते हारे पे रनका  
 सर्व न सुनत ही अब लुप्त काहे दु रावत हो  
 प्या दे ॥ ने वर ॥  
 सुनत भगत जोगे पार परोरन न ओर न गरेके  
 सब ही लोग वा देख ओत न प्या ही को  
सदा रंग मों सदसा राजू ॥ १॥

राग तिलक का मोद रवी १

८ लाल मूल फाका

चंद्र बदन मृगा नै नीजो बन सद साती चाल चलत  
 आपनी जोवन के गर्व ॥ लचकत कर चाल चलत  
 द्वि द्विकल कपोल कोचन वा रू साधव पर  
 अर्ध स्वर्ग ॥ १॥  
 १-॥ १॥ ला. रवी न गे

हर बिन नायक लंबो धरो छत्र गोपि शान गानो  
 वाजा वो निरुज मे ॥ ऐ सोरी गावे लान सुजावे  
 नंद छेल गीत धंद उहे रू धरूपत नीके  
 गाये सुनाये गुनियन मे ॥ हर बिन ॥

९१ सपला ला भा. पैंकी

सुद बिसरु गदू आज अपने गुनकी जो चाये ले पाय अपने गुनकी ॥  
 मांउ में देया छवनु लागे अबल पीर फकीर सब गुनी सब गुनी ॥ १॥

९२ भंकार रवी न गे

सुकर लार जागे निस्तारनी ॥ भंजलन पाक आज देह माम मे ॥  
 रवल मेरी लाज ॥ १॥

७



ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।

ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।  
ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਹੈ।



२०

॥ रागभूप ॥

सूखे मोल न नाही कामि न रूप की मागे रे ॥ सूखे  
कर ही मान मान प्यारी की ने जलन कर से रे ॥ १॥

वाक्य अली रवा साब को नरा ना

ओढ़ानो दानो तदानो हो भूत न न न दरे दरे ना त दारे दानो  
उदानी दानो त दानी सुही मना न रे हो भूत न न तारे दानो ॥ धुन ॥

उगाउन मो रे आई आई ला सोजन आनंद मिल  
गावोरी. मौं गल रा. ॥

जब ही जनम जानम जानों गी जब मिल  
जब मिल गोमो दे प्यारो येरी जब हो जानम  
॥ जानम ही त त पजानो हीं गी तब जब जब  
भर दे नये अने न नैनन जब ॥

पहाडी पहाडी रम्य ॥ ३ ॥  
लेक छव जगदीश की लोने मालिभर प्रवारी यां दे यां ॥ ७५ ॥  
मोर मुकुट पिल वर रम्य हे कुं उर सुत काल काव की  
मोर मालिभर प्रवारी यां दे यां ॥ १॥



कैसे सुख सोवे नींदरी या रास मूर लचिल  
 चंदी कैसे ॥ सोख सोख न सरंग उकेला ॥  
 बल जा भेदन आल बड़ी कैसे ॥ १॥

मेरे मन अक काली वामूर लके धरनि मो  
 नि सवास र मई जो ही भीत लहे नि कसन ॥ २  
 लागे प्रान मेरो ॥ १॥

कवन टंग लोरा सजन नीरी बुलौ इत रात  
 उत रात भीली जात कवन ॥ धांड मे हेर अत ३  
 लोरी बला लो सोल लगा रही धात ॥ कवन

दया बजी बा बाल भईरी सुरजन मे का आपी  
 बना ये लगी रे ॥ अत सुख पाइ ला मो मन  
 जब ले लब ले गइ ला देया ॥ १॥

बाल मरे मो रे मन के चिते हो वन दे रे  
 मीत सियर वा बाल मरे ॥ सदा रंग दिन  
 जायो बा दस वा सुख नींदरी या सो वन  
 दे रे बाल मरे ॥ १॥



एन.ए.एस. १८३६८६

कैसे कैसे समझा बुझे ना बोले लाजीये ॥  
नाही मान ॥

ये की आज्ञा न गुं द ला मा ल निया इस बन रे के सीस  
से हुवा ॥ लागी लगन सु ल जान सा ल म सो  
बन वा बनी सो लोग ने हा ॥ १॥

10

11.



॥ श्री ॥

हमारे

ये भुरजा यरही

उत्तम

उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
॥ ५ ॥ उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम

॥ उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
॥ उत्तम उत्तम

॥ उत्तम उत्तम २०

पियर उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
॥ ५ ॥ उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम

॥ उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम  
उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम

२० हमारे चीज खोने में एक तावा

में डेरे चार हांड मी डेरे लपटी मी के हैं मिनेवा मानी  
ले डेरे कारन मे डेरे ॥ कमली रंभी फिर ही सं हांड रंग  
तुहिना मी वा मे नू डेरे कारन मे डेरे ॥ ३ ॥

०१

॥



10 777 0115

ओ द द न दे रे ना दीम दीम दे रे दानी ल दे दानी दीम ल न दे रे  
दि न लो ल न न दे रे ल न दे रे ल न दे रे ल दे दानी ओ ॥  
ओ दानी ल दानी ल न दे रे ना दीम ल न दे रे ना ल न दे रे ना  
ल दे दानी ल दे दानी ना दे रे ल दे रे लो म ल न न दे रे ल न दे रे  
ल न दे रे ल दे दानी ओ ॥ १ ॥

॥५॥ सा हेन निबुद्धा ह्यनर्कसि सा साहायि ।  
विधा हो सी अथ के से सां गु गी खे लन वा मो पे लक  
लक मादे में दवा ॥

32  
 ये लउ गहे ली बन् सीरी तेरा बर ब्याहन आया ॥  
 हि समोति यन को सी स से हेरा बि राजे ओर बाग सो हे  
 सेंदरी ॥ १॥

परिहो पाव आधो र मो रे न जगा पि या मु जे अडा कि  
रे न जगाले ॥ निमदिन जगे की लो रे हमा हो से धाने  
मो रे लौं गी बले शां ग रुवा ल गरी ले ॥

[illegible]

34 अक्षर

12







३५ म ११.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच  
मानसीया निदानं गच्छेत् कुरु मदिता हिरि  
॥१॥  
स स सुरान् सुरसुरकी स स करे मनरोग  
अथैवम् अथैवम् ताम्बूनी धनको यवनमु  
इति श्रीमद्भगवद्गीता पञ्चविंशोऽध्यायः समाप्तः

मथे मिल धरे बैस गीने साहं दे रहे  
जोगी साह के सिखा ॥ १५ ॥

सो जाने सी जाने का ल मुना मोरी लेहरी पीतले बदन ॥  
॥ बिगर बन धत बन न ही आहत समो हेने लेहरी  
ल धन का सो जाने दो ॥

धुमाकनीयां नचैरनां ॥ धुमाकनीयां नचैरनां ॥

कादरको दरल अरवीशागुभानी सदात्रेगादिने।

[illegible]

शंकरा. गु. स. पे. ज. ली.

पीरु. वाऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ मे <sup>स ग ग प</sup> ~~कै~~ उर ना, गे <sup>न स स रे स स</sup> ~~वा~~ <sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup>  
 लागे जिन मुसो <sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup> पी॥ ले सै वंग दंग सब  
 ओर जाने मौ मद सा <sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup> जो ना कै वे की। सो सो <sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup>  
<sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup> <sup>स ग ग प</sup> ~~वा~~ <sup>ग रे स स</sup>



15







ये सुन के हल धर लाहा आये देखी शा  
 उरिह सो बने के नहि देखी सो को लखन  
 धरि को सो मे कर जो करी के कर कर  
 भली करी दो हल कर कर काउह काउह  
 मे लं स नमो ॥ ३ ॥ कर जो करी के कर  
 ॥ १ ॥ समाप्त हो खोले सो हल कर काउह  
 निकलत सगुन भले नही पायो मे से प्रान  
 जीवन धन काहा लिन के भुज मोह  
 नाथ दिवाये ॥ २ ॥ माता सो काहा कर धीव  
 सी रोव रूप कहा नाम सुनाये मर दीन लव  
 कहन जरीदा दो थयो लुम एक हो गी  
 काये ॥ ३ ॥

रव्या ६५ कोनडा ॥ ११

ये लुव सो हे करी म राहेम करी म पाक पर कर दिगार दिगार पाक पर कर  
 दिगार गरबी को गरब दूर कर उरत है छिन मे दुखिया को मोरे  
 ताये ॥ जो मो मन की इच्छा सो पुज हो ॥ साइं सदा रंग को दिजे  
 ही न दुनी मे उया बाता है तव सो ॥

रव्या ६५ अउर चो लव ॥ १२ ॥  
 न बंध सुख सीं धु हल पाकर कार नीक र धु राइ ॥ सुन है नाथ मन  
 वलि निविध जर करत फिरत जो राइ ॥ कबहु देख जग धन मय  
 पुमय कबहु नार मय मय ॥ १ ॥ भिरी भवि मात को न दुख बि  
 रुवि हल न नासे ॥ २ ॥ व मज मय ने न धर्म बल कहु मे तव जस्य  
 दाइ ॥ ३ ॥ अलि दा स मव को रा रा म पद से माहे न राहे ॥ ४ ॥  
 वव मरि च को य मिका ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥



गूंद ला मालन हु को दा से ह ॥ आंख बना बंन  
की ओ मुबारक ॥ नूर को उ ब र ना अंग क  
पो न नी म दि दार न बी जी ने पा थो से ह  
म ख ना आंग मु हा थो ॥ गूंद ला ॥

६५ रॉन पे.  
तू है मं मद सा दर बार न जा मु दी न मु झा थी ॥

थो ले कल स पर ब ल ब ल जे ये गु म पर उ नी है  
कुर बान न न जा मु दी न मु झा र्ही ॥ १ ॥  
जो हि जो हा पा वे सो हो फ ल पा वे स द्वा रंग ले से ही गु न  
॥ ॥ ॥ वे न जा मु दी न मु झा र्ही ॥ ३ ॥

लाल क्षिपा

देखो सखि अङ्गिर धुनाथ सो पावनी ॥ नीर निरु  
भरन कपूक भव नील रत्न मील आंख ध्वन  
हरन दुख दा मिनी ॥ १ ॥ सर भु म जन किये  
बीग से उत लिये हे ल पर जन हि ये क पा को  
मु क पा नी ॥ २ ॥ स अ मि आ व ल स र्ग म ना पर  
मु व न ॥ मी पि पि व न न र धु व ति उ व न कु व र  
जा को स ल धि नी ॥ ३ ॥

६७  
ओ दे न दीं लो दे ले ना ल दि यो न दा रे दीं ल न दे रे ना  
ल दा रे ल नो ल न स दा रे दां नी दीं ॥ उ द ले न  
दे रे ना ल न दे रे ना ल दि यो ल दा नी ल ना दे रे ना  
ल ना दे रे ना दीं दे रे ना ल दि यो ल दा नी  
दीं ल न दे रे ना ल दा रे ल नो ल न ल दा रे दा नी



जो दे सुख मरति सखा धने को कोरे सखे वे  
हुने मे सखे के के उर करे सखे सखी सखे फाले  
और बिंदी सखे हे सखे सखे सखे सखे सखे ॥

मन की मन मे रही कान सखी पीया सो जिया की  
नाल ॥ मन की ॥

वे लीया सुखे लीया सो माहि रे लीये वे ३१७॥ ३१७॥  
॥ लुहि करी म लुहि री म लुहि सखा व जवाह लुहि गरी बके।  
पीलन वा ॥ ३१॥

पीया पिआ की

रग दरवारी बिलर ७२ ७४

हजब चतरंग दलवा जैरे चौं डिका जबाहि  
कोपिल खग शिंग चढ चलत धाये ॥  
सससा गाऽ मय धधपम गरेसा नीध नीध पऽ मऽ  
गऽ रेऽ लऽ गगरेसा निध निध पऽ मऽ गगरेसा सखा वे रे  
गग मय पय धध नी नी धध पय मय गगरे रे सखा  
॥ ११॥ नादिर दीर दीं लदीं लदोरे लदोरे लनी दिखानारे  
दिखानारे लदोरे लदोरे नादिर दीर लुं दिर दिर  
दिर दिर लिये च लिये च लक धि ला ग लक धा ३ वका  
धक धक धुम धिर लक लिरि किर दित्त किर लक  
गदिरि नधा धाक जनु नान लिरि किर लक लक लक लक लक  
खिन खिन लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक  
लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक  
लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक लक  
३१ नौंद सुख मन बांछिल लोरे सुख स गरीये ॥

कोन गत भईरी मेरी पियान पुछे नाल ॥







ये शीं मा पी संग से हे नन नन फा गरु  
वसंत ॥ मावरी गो री बोरी ले गुलाल ले  
सहे अ जमा पर वरं न इस इस इस इसमें म.

ला नन गये वज्र से मर मेर लाक फा न बनाये  
X नीके सम से गा नी नर बाबु मिर दौग सौंग लि  
गवल मुनी आये सौंग त सौ

चोकरा मेर

ला ल डिन कर हो ५९

Handwritten signature in red ink.



✕ आज बनी संग जागारे बनने अजबनी ॥  
॥ निंदका भाला पलक ना ही खोले  
खोले खोले हर सपा गा रे बनने ॥ आजा -

कामोद क्या है

हुं तो जन मन छं डे ये निरादि नम पिशा को सा ग  
बे ध ना पे मै ये भागत हूं मे रे प्या रे को कि जी ये क  
आ ग ॥ १ ॥

जाने न दे गी रि माइ अप ने बी ल म को ने न न मे कं र रा  
खों पल वन कुं द कुं द करे ॥ जब आवें गे आ हा डि  
आप हि मो रे मद क ले हो ब ले यों डु म डु म करे ॥ १ ॥


अनला. पो. पेन्नी.

✕ जियो मेरा लाल बनवा मेरा अब सोही कंगन बे मा ॥  
सब सुने दा बना सोहे रा बि राजें ओरे सोहे मोती लका मा ॥ १ ॥

रु



~~ठमरी. एड्डा~~





आज मोरे आधी लो सोमल पारे करूं गी उठा दोंग  
र स की बलि था ॥ आनर आर गजा सु गंध  
बेल इन फल इन सेज बिधा की पू पुन पुन क लि था.

ये हो गडा आब कि जे रहते मजिबक नो बक सो ॥  
कन्दु धनो ब्याल ए नो मयुरंग मयने  
तक सीर निक तुम उठ मया जावो नो नज  
न खे सो बक नो ॥ ११ ॥

29  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 अ० १०८ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

नाऽऽ कहैऽऽ आऽऽऽ जतऽऽ इश्राहीऽऽऽ म मुऽऽ वऽऽ  
इऽऽ छकेऽऽ रेऽऽऽऽ ॥ म ॥ ३ ॥

24



10

८४

आहुहु धितिलाना दीं लननन दीं लननन निलनन निलनन  
निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन  
निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन  
निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन निलनन

वृजें माधु रानी वृसन माधु विद्याधर रत्न लो वृजें ठ भवा  
 नी ॥ लुरिगुपल लुरिप्रभार लुरापल शरित मे वर कलजा  
 मा नी लुताद भवानी वृजें ॥ १॥

[illegible]

eh

25

55



ने नन<sup>२४</sup>चावल गुजरि उतर गात भवधे कहत  
मन कसो जात नैनन चावल ॥ हरे ते गो  
के सरे रंगी ओगी सा सुयी साओ मन सुखारन  
सु होवे नैनन चावल ॥

॥ देखत ॥ शिखार १

हुंचे के कारन जाग<sup>६५</sup>की जाईका गदिका मोरी ॥  
सु मीरनकर ॥ रही जखी घनमे, री जागरही चौ ओर ॥

॥ २ ॥ ६६

जागो जा ॥ गकीनेरी मोरे कहत कहत सुनत  
सुनत दुखरकी रसवासीयां ॥

बेस बेस बैठे न्यारे हुंकीर बैठे नुनन सो नुन मीका न  
७ नियन सो ७ नीया ॥ ॥ ६७

॥ ६८ ॥



22A

॥ गुरुदेव गुरुदेव ॥

॥ गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव  
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥ गुरुदेव गुरुदेव ॥

॥ ३ ॥

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥ गुरुदेव गुरुदेव  
॥ गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥ गुरुदेव गुरुदेव  
॥ गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥



७२

ताडी भाडाचोनांक

१००

आऽ आऽ आऽ रऽ पतगऽ वाऽ मोरे पिघा कहीदेऽ होऽ

पंतीयाऽ रेऽ ॥

तुमउनसन कहीयो तुमराखोथाय तुमबिन  
गग मम थथ सासासा थथ नी सारे गगोसा नी थथ

सदां रौंग अब सरी जान छनीयांऽऽऽऽऽऽ रे  
रे रे रे सासा सरे रे स रे रे नीथ वथनीगोसाथ

हमीन चक्राख तराणा

१०१

दिं दारा दिरदिर तेकेकाना तननीतन तनतना तनतन

देरे दाऽ नी तदीयनरे तदीयनारे नीतारेदानी

तदे दानी तदानी तदानी ओदानी तदानी

तदानी तोऽम् तनन तोऽम् तनन तोऽम् तन

न ॥ तेकेतेकाना तेकेकेकेकाना तेकेकेकेके

केकेना नीतनीतानत नीतनना नादिरदिर देनी

तुंदिरदिरदेनी तननतन तुंदिरदिरदेनी ॥ ३ वेळां

१२

28



१०२ मल्लार

बे लही यां फूल रहो अमरै या मोरा यी  
बार बार मलीया ले हो आम आम की कीवाले  
ला ल बै लोवाले रामबाहार आई ॥  
डार डार और पात पात पन फिरत भवर  
मंड आई अमरै या पर बैठ कोय कीया  
कुकल न बह सुना यी पीह पीह रहत पपेया  
चौ अरे मोर बुलायौ आत मन आई ॥  
॥

१०३

ला देरे या दो दर दीम लनों देरे ना लनन  
नन ने ले नाना नाना तुं दे नारे नारे  
यली यला लाके ॥

१०४ मल्लार ३ मल्लार

१०४

तन ना दे दे या नि तो तन तदा नि दो र दी तन नन न बा दी तन  
नन न दरा दरा ना दे दे तन म यलिय ललल ॥ न के च  
मे जिंदत के कोय सेरा मे रस सा के या सा मान वी  
गे कुं के बीरा मे रस ॥ १ ॥

१०५

मि. मल्लार ३ मल्लार

बिजलि चमके वर स्य मे हव वा आइ बंदरारियां गरज  
गरज मै अतउ उरावे ॥ धन रस जे धन बिजली ज  
के पापियां पि हुंकी टे र सु नावे कहां कबुं कित जाउं  
रा द जित व स्य मै ॥ १ ॥



निजा स्वाभाव न थन र्वा पैकी  
 ॥ १ ॥ निजा, निजा, इति इति इति, नि  
 ॥ २ ॥ निजा, निजा, इति इति इति, नि  
 ॥ ३ ॥ निजा, निजा, इति इति इति, नि  
 ॥ ४ ॥ निजा, निजा, इति इति इति, नि  
 ॥ ५ ॥ निजा, निजा, इति इति इति, नि

(सगसुसमलहार) लहुरललल

(राग भीम)

(राग वसंत) गुरुद्वयम्

फगवा बृज देखन को चलरी फगवे में मिले  
गे कुंवर जान जाहं बार लकल हो बोले  
फगवा ॥ आशीरी बसंत सबीवन फले  
र मिले लात सो बोले फगुवा ॥ १५ ॥







4

996

295

99c

52



जो म बहार

920

107

पौड़ पार देखना माइ के सेक बरब उ येअ

व ध साइ

~~सिमप गम छप ध नी का नीप~~

~~मप गम मप ध नी सापुं~~

929

~~मप गम म~~

X हे माव र न न लाऽऽऽऽ र पि सादरीया ए सावन  
नी कारी रुत भारी उर सावन रगेऽऽऽ गीउ वर सना। ध।  
न मल न म क बिजरी साव म के मेरो जव साउ दे हे पु  
उयाळे पारे न पु वरी वर न न वा गो ग द। वर सन।

गोड

922

गगल वर म वी गल उा इ ली पु माइ मिल न को अप ने प्रेम  
पहि वर ने लो गर वाल ग वि। ११।



कहि नाम नाम लख गगनहार  
कहि दु दु काल दुःख के खिचोर धन धाम को ॥  
॥ नाम लेत दा हीनो हो लभन नाम विधाता  
नाम हो ॥

हरी

ज्या की चपहा बो धला सो को बसाय  
मधुकर मा पो जिह कयो जाय

तिलाला 924

तुलने बाह देस वाजा जामो रा कंथु लीनो लुभ्या ॥ चलो  
सखी मिल हेरी खलो गारी देरी ना ही उठोगी डफ बजा  
॥१॥

925

कही मन संग का के लंगर हि जो भव गंजल  
हूँ हूँ गुरु वाली जो को हूँ मोर नो कही  
को मल को हूँ हूँ सुनी हूँ क उठी ॥

926

नधींरु लभये हूँ नधींवे बाहा

927 बहाव दो पंचदी

ज्या की चपहा बो धला सो को बसाय मधुकर मा  
धो जे सकेँ सो ॥ गुरु चानन पे ध्यान धाई ला सो कबुना  
आपाय ॥ १ ॥

928

महमद अंगरी या नवी बनने परायो क र मधानी हो सला ॥ जिन पंढे  
क व मा रा पी क मोही ममान जामो जान ल होने यान ॥ १ ॥

25







लिकवना १३१

लावे से को ना खूब माली हम मन नमन परे जे  
काम ॥ याद क से गे लो याद रहे गे सहार गीते  
नाम ॥ १॥

बहार १३२

खर ३॥ १॥

हजार ल रवाज संग खे लि ये धमाल खालि ये धमाल  
खे लि ये धमाल ॥ बीड सरवाज मिल बन बन उ  
ना ता मे हजार ल रवाज खे लि ये धमाल ॥ १॥

चौ १॥ ३॥ १३३

सुनत बन नुरालि को धुन बाजारि ॥ पपियां बुझा  
त को चल उज्जु है औ र मोरन की गाजारि ॥

३॥ १॥ १३४

भजत धुबि रनाम जुगल चरना ॥ इतहि अजो ध  
निरमल सरजु उत्त गो कुल सिल उत्त मुना ॥ १॥  
इत को सत्मा माता गोदा सिखावे उत्त जसो दाहा आव  
पावे ना ॥ २॥ इत बीहे पर सीता बीराजे उत्त बाधा  
संग करे रमना ॥ ३॥ इत स्यावर पर सीता लवान  
उत्त नख परागिरे धरना ॥ ४॥ इत लंका पत राव  
मायो उत्त कौ सपछायो श्री ललना ॥ ५॥ इत लंका  
त सुर बीराजे जुगल चरना चेत धरना ॥ ६॥



६०

१३५

बर जो नामाने आयी बरन को यली या कूक बुलाई  
तै सो ही पपे या पीहं पीहं करे बर ॥ जब से पिया  
परदेस गइल वीत बौले बधुना सुहायरे ॥ १॥

१३६

आयी कलन बेलरी या सरस सुगंध लागी वीर हां  
बहुत ॥ जो मोरे कं ध जारे पत गवा उन बिन  
लागी बिरहां बहेत ॥ १॥

लै ला ला ॥ १६ १६

१३७

मै ली मै ली एं जी एं जी जो रे सब नार गरवा  
लागी रंग बरसा कलु ब संत माली जो बन  
मा ति च्या ल लो री मै ली ॥ सो ले ह सीं गार  
कर अबरन पे हे र पे हे र पे हे र माला  
अबिर गुला ल लियो भर जो री (जे. १॥ १॥)

१३८

फगवा बजे देखन को चलरी फगवे से मिलेंगे  
कुनर जान जग बर ल फलहे बोलें कबीरा ॥

आ पीरी बरंत सबी बन फूले रसी ले लाक  
सो ले ह आगुवा ॥ १॥

॥ ३ ॥ १३९

पिया संग से लो रि बरन बसे के बरन पेन फल वन के ह  
रवा गुंद गुंद डारि हो गरु वी ॥ जो सो हि ब संत उपजे  
सब कु मन उल न्या लिनो मगुवा अतर चाव पारि मे  
रा जो पारना मा ॥



॥ असाई काग सोहनी ॥

१४१

प्यास में जान जर नही आवेंदा ख डि बुकार  
पीनी पीनी पी ॥ - तन बही मन उमंग  
बना बु कै से कर रा खू जी जी जी ॥ १ ॥

॥ ११॥ ॥

१४२

दीम तन न दिर दिर जानों त दे नी तन दे रे ना  
दे रे ना दीम दीम ॥ दीम तन दे रे ना त दार  
त दे दा नी ~~ना दिर दिर तन न न न दीम~~  
तन न न न दिर दिर दिर दिर दिर दिर दा नी  
॥ ना दिर दिर तन न न न न न न न न न न न न  
तन न न न न दीम तन न न न न दीम  
तन न न न न थु गु न न न न न न न न न न न  
थि लो लि ट क त ग दि गी न धा लि ट क त  
ग दि गी न धा लि ट क त ग दि गी न धा ॥



[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or a page from a book. The text is written in a cursive style and is partially obscured by a large, stylized red mark or signature in the center. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines.



नूरी मन मुमरन करे निस दिन रट रट  
सा हेन सा हे सा दार ॥ हो तो से व क ह  
बार को जा चके मुम हो आ हू रो हा हू रो ॥

आभोग ॥ जोगु निधावल सो फल पावल  
न्या मत देत सबन को पूरी ॥ लान सेन  
मी था ये ही सुत करे गोग लान सँ म पूरी ॥ १॥

चि. स. ५. पैत्री

कलित १४५

देन का ॥ सपना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मे ॥ का ॥ से कहो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
अं ॥ सो दत मे ॥ वत आ रे वे वयो ॥ ली ॥ ॥ ॥ जब ॥ ॥ ॥  
॥ के वू ॥ ॥ न पा ॥ यो ॥ आयना ॥ ॥ मे ॥ का ॥ से

१४५



१ मीठा-चामडहार ॥ गरजाराजधनवससे ॥  
२ रागमहर ॥ कहोकाउली ॥  
३ रागमहर ॥ उगईसमधनमोरीरे ॥

१ मानो-धमधगमंध  
२ जेजेवंगी-मोरेमानि

६९

१ रागमेधमडहार ॥ उमंडधनधुमंडबरसे ॥  
२ रागमहर ॥ पावनकलकीवाममहेली ॥

३ मूरदाकीमडहार ॥ गरजलआसे ॥

१ नायकीमडहार ॥ एवरदाउमंडधुमंड ॥

१ भीमपलानी ॥ नादसमुंद्रकोहमाहा ॥

२ रागमहर ॥ लहानिलहानीदीस ॥

१ विदावनीसारंग ॥ आजअंजनदियो ॥

१ कामोद ॥ सावनकीसांजमोपे ॥

२ सहर ॥ फागुनभासहकासबडोलक ॥

३ सहर ॥ मातीमालनी ॥

१ मालकौंस ॥ गहीभेदहोल ॥

२ सहर ॥ लानदेवेना ॥

३ सहर ॥ मुखमोरमोर ॥

५१



आज बधावों राज गोंद सा लुरक वा जिरें  
मंदि लरा बाजो ॥ सम धन आरु बन बन  
आयी. झुमट खेले पिरासन ये सहे लरी.  
आधी नी की साज न के का धर बाजो रे ॥

थोरे थोरे दैनन हो सखी गो मिलन कु आये  
बाजुरी या ॥ संग की सखी सब दूर निकस गयी  
एक सावरी दुजे गोरी या. ॥

५१६



63

इलुके कास रह ना सास गस बी  
आई लाभाइला मोःःःःः रोःः ॥६॥  
सासा रे गप ध

अंका समिव न कर रही आखियन मोदरी-  
प प सासा २॥ साधसासा सा ध ग  
लागरही चौ ओःःःः देःः  
ग प ध सा ध प धसासाध पारे सा रे सा

देस कर लिक्वासा

जा गो जा सा गो कि मोरी भोः रे कहैत करेन  
सुनत सुनत दुबर कीरम बलि याः ॥७॥  
सासासा रे रे सा  
बोस बोस बेठे न्यारे हं फिरे बेठे  
ग ग प प सधसा सधसा सा रे साध प

भजन सो भुजमि लासै धालियन सो  
ग ग ग रे ग प ध सधसासा प ध ध ध ध

धालियाः  
प ध ग प ग

Handwritten signature or mark.







(५५) ०

लाल इनाला

१५५

५५

× आज अंजन दीये राउ चिकाउ ने न कोउ  
 आज अंजन दीये । हीन मृग हीन कुल कुल  
 कौचन बेडव अनदे के चैचल निपट राउ मकु २५  
 देउ न कोउ आज ॥ ३॥

(५६) ०

वाग का मोद १५५

× साऽऽऽऽऽऽ वन की साँजऽ मोपेऽ दूऽ वर  
 भइ लीऽ विरहं कठन मोपे दूऽ वर भइ ली ॥  
 ॥ ३॥

(५७) ०

कामोद होरी १५५

× फागुन मानह लाऽ वऽ वऽ लक जौऽ सी दूऽ व  
 उमंगी हौ माऽ उये ॥ होरी रचा श्रीज बाडक

गोऽ जाऽ क गुलाऽ क उडोऽ वंग वीऽ र कोहीट

॥ ३॥

(५८) ०

वाग मो का १५५

× सुवका आऽऽऽ ई पिया केऽ सेंऽऽऽ ग

दुरन हो ई आऽ ई सऽ वऽ दूऽ ने अंग ॥

नो व

हुटे बाडक छुटेऽ मुख पर द राकि हे अंमिया

बियु सी हेंऽ मांऽऽ गऽ मुख ॥ ३॥

(५९) ०

राग माळ कोर १५५

× गाली भेड द होऽ ल सीऽ ल कर दऽ ल भडान

होऽ ल की जो को दऽ मे रां क ल न मन सेऽऽ

45



धुंम धननन धुंम धननन बिचवा के के  
 मोरी माई कबतुम जानो पीके उंगमे  
 भयो ॥ चारदिनाले आगम भये दुलवा मेहेलो जिराके

(१४) सबीदुनव का जो ॥ १५॥  
 लक्ष्मी देवी. लि. ल. १५४

जो वं जा ५५ ॥ ५५ ॥ ल ले या के मे के को ५ मव

धुंम के धाम ॥ वर जिन मानव  
 काउकीं उचपक भा मे जे मे गाम ॥ ३॥

(१५) १५५  
 रामकली को मल गंधार से  
 बंधावा गावों सबामेक नर नारी इस  
 धर आज ॥ व्याहान आया बन रा  
 रं गीला गावों बज्जीवों रिझाव ॥ ३॥

(१६) गुनकली १५५

मोहे लेत र सब विद्यां कर चतर  
 सुधर नार ॥



~~दाउउ दाउ हाउउस बाभीउउउ बाउकोध गणेवा  
 नाउद मुनीउ भुर बलीउ माहउ देउव इनन-बू  
 पारो नामहरकीउ पुजब मोउउउउउ ॥१॥~~

~~(१०) रागचैल लालिवाउ १५०~~

~~X सजेउउउ याउउउ ले पर देस गवन कीउनो  
 धरचाउर काउगउजे नाही देउतहे ॥~~

~~होउजानु केकर रंग बली केकरे रंगमे मनुवा  
 भीउउउउ ॥२॥~~

~~(११) रागदेसी सोडी लिलाळा १५१~~

~~X म्हारे डेरे आनोजीउ माहा बाउउ आउउ जीउ थाउ  
 होला थासीउ देर करे बाउ जी थाउ ॥ आगली नाउत  
 लुम हमसेनाउ करोउ मदारांग कडी कडीउ  
 नीन नजावो जी थाउ म्हारे डेरे ॥३॥~~

~~(१२) रागअहीरी गडी १५२~~

~~(५७)~~

~~X नीउ वरीउ आबीर गवागनि या मा आलीरी~~

~~X सपनेमें वो आगे मेरे ॥ नींद उधर  
 गई उधर गई आंख बाई मोरी रे ॥४॥  
 कवाउ हसन वो बीर रो अहीरी ॥५॥~~



एमाकजी हैं नकं उनी दे नैन मा त  
॥ मंमद सा पिशा चालर बाळमवा  
कोइ सावरी वस जागे हा ॥ १॥

(१८) रामकली दानीवर्ज 945

जाइ न दे रे लहेना धोलेले काजा  
लो लन लान दे रे लहेना देना देना  
X लान दे रे ना ॥  
उनी थलकां थला लाळे थल थलो  
थल थलां थल थलो थलकी थला लाळे  
॥ १॥

(१९) रामकली 946

मल काउ करोरी दोना मेरं धारे राज  
दुकावे बने को ॥ बनरी को रंगदग

मानो रंगर लियां ॥ १॥ बाकी बाळा बाळा

॥ १॥ (२०) ॥ रामकली टपा ॥ 947

X हावे दज किनी ये नोरी बलार्ई ऐस  
भोले भांजेनु ॥ पलकां दे उरोळे बवोळे  
धुपलक रे हा नें ना दी कर हा उरोर  
गारि ॥ १॥

Handwritten signature or mark.



✕ आज रंग रहे एसा रंग रहे वो अन रहे  
 बधावरा इस घर ॥ निजाम हीन  
ओर लीयां जग उजिया रा मो मांगे  
 पर संग रहे एसा रंग रहे ॥ ३॥

(२२)

राग जिकफ १७२

✕ मोरे कान भनक वारे पाइ ली सदा रंग  
 कल धर आवे कलन मो रे मंदर वारे  
 ॥ लन मन नो छावर करेई सदा रंग  
 बलन जरत वारे ॥ ३॥

(२३)

राग पूषी टप्पा १७३

✕ समजामि या दम गेनी मडत हवेनी जोगुन  
 रे ॥ दि लभ रहे संग ॥ ॥ ला खजि ह सद के  
 कीली सुनवे के लडन वुल पंदी नो ५५५५ कर  
 लु भी ये जोग ॥ ३॥

(२४)

राग पूषी टप्पा १७४

✕ मैरी हाउ रंग बूडा चुडा अलकर कीला  
 मा ली जा के गुंथाद या मैरी यानी वें निगोडी दूचे  
 ॥ वेके संथो मोति धन को बरीस मो हे  
 चंद द या मुख पर के हा नि कां लगा ये नी  
 बाल म द बा का जो डा ॥ ३॥

१७५ राग जल धर के दारा तिलवाडा

✕ धन धरी धन रा ली माई धन मो हाग की ५  
 वी ५५५५ माई ॥ मोमद सा पिया ब्या हान  
 उया था ओर रंगील बन ब साल वी माई ॥ ३॥







बाबु मे लुरकन भरी हं ॥ बाबा बरु मे  
नदु सी गंगा मे कलम बर्या वो सुनति मे बांगरी  
॥ ११॥

ते लो सुन सार की बडा सी रो बीन ॥

१५२

\* लेले लाना लो लन दितान लन लदरे दानी  
लाना लुंद्रे लदरे लदी लान देरे लदरे  
लदरे लाने दानी दानी लेले लाना ॥  
नादिर दिर दीम लनन दीम लन दिर दिर  
दानी लदी लान देरे ना लन देरे धे ल लो म.  
लनन दिर दीर लदरे लाने दानी लेले ॥

बीन बाडा लो मारी सी

१५३

आबरो बाबू आहा जो हवा ग ॥

विलाल

१५४

पलिया पल गवा भो मारिया लन मोरा रां देया  
वेगली रां ॥ धरि धरि पल पल छिन छिन  
मेका जुगल विलाल है वेगलिया शिरी शिरी

छली ०२ ११॥

५१



आरीबीरहरबीछरनदुरनपावो ॥धुं॥ पातेया  
नाभेजीखबरनापठायी मोरी आली मिठबेकीअब  
शकहीरी ॥९५॥

भोरकयारे मिठनभयो लवा मोरी मापीतम ठगवारे  
मंदरवावाजे मांदिरां ॥धुं॥ आवोगावो नाचो  
खबखरी सहेली सदा रंग धर अनंदबलावो स ॥९५॥

नवरिया झांजरी <sup>१९०</sup> आनपरी मजरा रौंग ३ ॥  
गहेरी ओन दिया अगम बेहल है मो ला ल गावे  
बेड़ा पार ॥ नव ॥  
गहेरी ओन दिया अगम बेहल है मो ला ल गावे बेड़ा  
पार ॥९६॥

<sup>१९१</sup>  
सनन सनन बाजे वायलि यामोरी राजे धू ला री  
डो रे अंगन माये ॥ मा बन मरमत वा री डो रे  
नैनान लाजे अलमुख जागे मा ॥

<sup>१९२</sup>  
होलाज यी हो पीके देस करी डो मो ला सींगर वा  
मा ॥ बहल दिनन पछी भी लन भई कवा  
मुजर पुर वा होला ॥ १॥

<sup>१९३</sup>  
जनम भयो री आजनंद मेहे ल धर बाजले  
अनंद बधाइ री.

52

राग आसा ट पा <sup>१९४</sup>

दीकभर जानवे जानवे दीकनु राजी खमाने  
गला भर आवे ॥ ५८ ॥  
अंजा लेनुते हसनदी मगरूरी सोना मुने  
दीक दीजाने ॥ दीक ॥







पारना पाइये गुनसमुद्र आथा कोन बिंदावेरीये क /  
हाकरिये कोन भात जानीये ॥ १८ ॥ गुनग्यान-चे भीकी  
जोही लागत है राग सोरतान कि ये घटा आईये ॥ १९ ॥

(२४) २०१ राग भीम पलानी  
आवरमं सोलार चंगा ॥ अंका मोली पर  
मल्ल रे मकरद पर धर किरत पर असपातये  
रंजी बखडी अस प्रेम लाल पदम मारे गांवा ॥ १॥  
जिन्ने कारन लुरची जो गीकें मुखसंम मान रे  
चिरजीवो श्रीजगन्नाथ जाके भीर मोर बैजू बावरे  
॥ २ ॥

(२६) २०२ राग हींडी  
फुले बंनटे से बहो रा आई नरनादी-मिज  
कर हो अनंद ॥ हमरो कंथ सोलन बसकी नो  
आला निमदिन दो हो उगरे सु ॥ १ ॥

(२७) २०३ राग पुनी ला. लिताला

X जमिगत कोजे मोरी हुजरत सुललान मसायक  
निजामे दीन औकी या मेरे बख इकाई ॥  
चौदर मे नाम ले हावा अवजरी जर बखरी मे को  
ग्यानमान सुर राग लान सदका ॥ १ ॥ अनमी ॥ रुका ॥  
॥ ३ ॥

(२८) २०४ राग जलभी ला. अराचा

X चलवु सुजा ॥ न ॥ मेरे हि ॥ ३ ॥ ये ॥  
अनके बालक ॥ ॥ ॥ ये ॥ ॥ ॥ ये ॥ ॥  
मा ॥ ॥ न ॥ मेरे हि ॥ ३ ॥ ये ॥ ॥ ॥



राग जो न बहार १२५  
पीहु पर देस वा माये के से कर सि लु  
ये अब धमार पिहु ॥  
हरि गोविन्द ॥

१२८

इकमकी ५५५५ वां - श्री साहेबजी अं ० ॥ मोमरुता-५५  
जो ही ५५ फर मादे ५ गाली-५५ बजावनिना ५५ ने ५ केन ५५ भू ५  
खा ५ न ५ मो ५ ५५५५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

गैरसी गैरसी नदिबां ~~वैरसी~~ पवन-चक्रन धरवैयां  
~~गैरसी~~ नदिबां मोरी-दूइयां ॥  
 गैरसी नदिबां वसैयां नकागी इस-व-ध-मन-सोंगी  
 मार-मोरी-दूइयां ॥ ॥ ॥ ॥

3720

SS

12



20

॥ संगीत रत्नाकरे रागविवेकानाम् द्वितीया  
ध्याशो हि ख्यते ॥

- ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥ अथ गन्धर्वे  
॥ संक्षिप्तं प्रसन्नं पदं पङ्क्तिना ॥ निःशङ्के निश्चितं  
॥ रागविवेकं रचयत्यमुम् ॥ १ ॥ पञ्चधा ग्रामरागा रयुः  
॥ पञ्च गीतिसमाश्रयात् ॥ गीतयः पञ्च पञ्चशब्दा  
॥ धिन्नागौडीय वेसवा ॥ २ ॥ साधारणीति शुद्धा स्यादवकैलति  
॥ तैः स्वरैः ॥ अखणित स्थितिः स्थान

(२४) राग श्रीरंग २०५

X उनाज आजंदर मुखचंद्र ऐकी विजानी के  
करत बैन पितागार लोड गनको उज ॥  
बोलापन जोवनकी भरी मदकि भरी गुण  
मोतिचन मांग सुहाव सुहावनको भरी  
बैनी धनी धप

(३०) राग २०५ लोड लिलावा

X करत बेद जुग सरस सावनको धारो  
धाड रोड गरी लोड गु बजावनको ॥  
मो नहीन आरुजवन लीजो हिंदर नल  
अलाश दरसनको ॥ ३ ॥  
निमैमैग

(३१) राग धूपली आनो २०६

X ललड बे लल धन कर कर सब बाड जे  
बजाड आरुको आरुको पी मोर मंदर वा  
॥ चतर सुधार अलाहि बेचोच मो वात नके  
बोधा र वा ॥ ३ ॥

56

3

42



(32) राग बगिसरा 205

X लजन लन दे रे नाऽऽऽऽ लदाऽ रे. लद रे दाऽ नी  
 ता मोहुरा लन लन लन ने ले लाना पानि धन रे  
 दा नि दा नि ओ दा नि लनि लदा नी लद रे  
 दा नि लन लन लन ॥ १ ॥  
 दोसोस दोस लनन दे रे लन लद रे लद रे दा नी  
 नगं नान धिर किटलक धा धा किटलक  
 धुम किटलक धुम किटलक धिर किटलक  
 धिन गान लोड धा धा धा धा ॥ लन लन ॥ १ ॥

(33) राग मेघ मलहार 206

X पाव क कल कोड नाग म रे ले सज जीऽ रजन  
 नागुराऽ वेऽ मोमना मेऽ विहर वाऽ ऽऽऽऽ बीन ॥  
 गरज गरज गरजेऽ ग. गमम गंगन वा  
 चो देस वाऽ ल मोरारे जिउऽ उराऽ दे  
 चमकल बीजरी यां आली निवरी दिन ॥ १ ॥

(34) भौसाचा मलहार 207

X उगाइ कम धन मो रे धर केसर रंग  
 मर भराइ मर भराइ उगाइ ॥ बंदल गुलाब  
 धिक्कावों कर भर गालन लभावों सब  
 सुहांगन मिलकें मंमद राको पेहेर ना  
 पेहे नाही ॥ १ ॥

(35) राग जयेश्वर 208

X झाको वन पानी न बडी बडी बृंदन  
 ॥ ३२ ॥ धामे मन रंग धन गरजाल अंकन  
 गीती भवाजी ॥ १ ॥







श्री गणेशाय नमः ॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥ अथ ग्रन्थेन संक्षिप्तं  
 प्रसन्नपरिपङ्क्ति न्यायिः शब्दे निमित्तं राग विवेकं स्वयत्नमुम् ॥१॥ पञ्चधा  
 ग्राम रागः स्युः पञ्च गीति सभा श्रमात् । गीतयः पञ्च शुद्धांश्या भिन्ना गौरी-  
 च वेसरा ॥२॥ सा धारणीति शुद्धा स्याद्वक्त्रे लिलितैः स्वरैः । भिन्ना  
 सूक्ष्मैः स्वरैर्वक्त्रे मधुरैर्गमकैर्युता ॥३॥ गौरी स्थानं गमकैर्गौरी ल-  
 लितैः स्वरैः । अथ पित्त स्योतिः स्थानं त्रये गौरी मता सत्ताम्  
 ॥४॥ ओहाये कम्पितैर्मन्दैर्द्रुत द्रुत त्रैः स्वरैः । हुकारोकार योगेन हन्ये  
 ते विषुक्ते भवेत् ॥५॥ वेगवादिः स्वरैर्वर्णचतुर्केऽप्यतिरञ्जितः ।  
 वेगस्वर रागगीतिर्वेसरा चोच्यते बन्धैः ॥६॥ चतुर्गीति गतं लक्ष्म-  
 श्रिता सा धारणीमवा । शुद्धादिगीति योगेन रागाः शुद्धादयो मताः  
 ॥७॥ षड्ग्राम समुत्पन्नः षड्भक्ते शिक मध्यमाः । शुद्ध साधारितः षड्ग्र-  
 ामा ग्रामेन मध्यमः ॥८॥ पञ्चमा मध्यमग्रामः षाडवः शुद्धकै-  
 शिकः । शुद्धा सतेति भिन्नाः स्युः पञ्च कैशिक मध्यमः ॥९॥ भिन्ना  
 षड्ग्रामे षड्ग्राम्ये मध्यमे तान् कैशिकौ । भिन्ना पञ्चम इत्येते गौडकैशिकौ  
 क मध्यमः ॥१०॥ गौड पञ्चमकः षड्ग्राम मध्यमे गौड कैशिकः । इति गौ-  
 टास्त्रयः षड्ग्रामकैः षाडवो ॥११॥ स सौकीरी मध्यमे तु षाडमा-  
 नव कैशिकौ । माहव पञ्चमान्तोऽथ द्विग्राम षड्ग्रामकैः शिक ॥१२॥  
 हिन्दोऽलोऽष्टौ वेसरास्ते सप्त साधारणास्ततः । षड्ग्राम्या रूपसाधार-  
 णाः का भिन्ना पञ्चमः ॥१३॥ मध्यमे नत गान्धार पञ्चमो षाडवकै-  
 शिकः । द्विग्रामः ककुभास्त्रं शुद्धा म रागाः अनुमीपताः ॥१४॥ अष्टौ  
 परागस्तेऽष्टकः शकारिष्टकैः सैधवः । कोकिला पञ्चमो रेवगु-  
 ष्टः पञ्चम षाडवः ॥१५॥ भावना मध्यमो नागान्धारो नाराय-  
 णमः ॥ इत्युपरागाः ॥



जिन गुरुव नमो जिनकी जिरी रहना कहें ॥  
(उजना रहे गो ॥ मधरे रमनाले बोले हों जामेन  
मो आगे नेककी करे गो ॥ ३॥

४२

हे म राग २२४  
देयासी मे कैने के जाय पुकारे मोरे लो जिये रा  
कलनाही ॥ आये मिले मोरे रमके रसीले नेम  
धारम सब वा रे ॥ ३॥

मलोहा के दा ॥ २२५  
मोहर मावनी कुडीव आसकी मेनु नानना पूछी  
मा ३ ए मं ६ मावनी ॥ दुखवा सुखवा दीजे  
सबनको हमरे करमविन योहि लिखों ॥ ३॥

॥ आ देन

(४६) २२१  
जे लखी लगे आडाने लावा  
लःःःः नरे लदे दा नी उदानी दानी  
ललदे ललदे दानी उदना लोम ल  
लननन दे रेना लड रे लड रे ललदे ललदे  
दानी ॥

(४६) २२२  
वेन दिन के के करे नी ॥ ५॥ दे ५ या नरु आ  
मो रा नं या म दे नम पिअ विन हो लम लनी अल  
पल पल देह धले नी ५ दे ५ ॥ ५॥

॥ ३॥

60



295  
लाउ नो म... लनननदे रेना  
लनदे रेना लदो लदरे दानी ला नो ॥  
हाथा था रोम थलली थली थली  
यला ला ला ले ॥१॥

(४३) 296  
X माउस रे राजु आनं दकड रोस नीसस स दोग  
अनंदकड रो निःसदी मास ॥  
ए चरु जुग जिगों करारे बब सलों अटल  
रहे लोउरा बाजु ॥२॥

(४४) 220  
X लाउस नरे क्षेम लानो लुं डे डे दास नी नो  
दानी लदरे दानी ॥  
कै बो कै का बो लत (मोमे लो गवा द खा म था ल हार न...  
बिन पुछे नही आसन नुद कोउ बाल ॥

220  
X भाषानाट 220  
भवनि मनागी गिहवारे लो रे उमा रे दिन बीले ॥  
अब दबदी अजहुन हि आ रें मनुवा की रो मनचित  
॥३॥

225  
X बवट राग 225  
विद्या धर गुनियनकों काहा अंदि रें कछु गुन  
चर्चा की लराइ लरीयें मे रों ले रो न्शाव निरंजन  
के आगे नहि लो गुनियन के चरुनन परिये ॥३॥

61



मेना जाउगी दोहरा मेनिक भ जाउगी  
अपने घर भोंग रहे बार मोहे बोकल दोकल  
भो भकर धर नारहु मेना जाउगी ॥ २ ॥

( राग पूर्वा ध्रुपद )

२३०

पली भ्रमन गत भौमल भौभक भा नेपबरनी कइना  
जात उपभाचिबल भौमल ॥ लीलाप बरनी कासक  
नार कुंड डल मद्ध उममा साडर साड रोड हि साड माड न भा  
चिभवल भौमल ॥ १ ॥

करी



३२  
 वेले गरउगी जबहि जानो सुख कितवल गया  
 ख॥ सदा रंग डोलन मिठिया मनु के सुख दिहा  
 उर बाब॥ १॥

9/10/60

63



राग भैरव.

असंपूर्ण, शेषम मध्यम. धैवत. कोमल. गंधार निषाद  
लीश्र. आरोहीत शेषम सोडून जावे. आवरो. सर्व. ल.

(२)

राग असावरी. साडव असंपूर्ण.  
शेषम गंधार मध्यम धैवत. कोमल. निषाद.  
वर्ज. आरोहीत गंधार वर्ज.

राग ज्योत्स्नी.

(४)

राग अनलैसा बिलावल. असंपूर्ण.  
शेषम. गंधार धैवत. निषाद लीश्र.  
मध्यम कोमल. आरोहीत मध्यम वर्ज.  
आवरोहीत सगळी सुर.

राग अटोरी. संपूर्ण.

(५)

शेषम गंधार धैवत कोमल.  
मध्यम निषाद लीश्र.

राग भैरवी संपूर्ण.

(६)

यांत आरोहीत आवरोहीत पंचो सुर  
कोमल.

(७)

राग रीं ध भैरवी संपूर्ण.  
पंचम शेषम लीश्र.

64



गंधार धैवत वज्र. मध्यम निषाद कोमल.

35

(९)  
राग मुकलानी. असंपूर्ण  
रीषभ गंधार धैवत कोमल. मध्यम  
निषाद. लीश्र. आशोहीत रीषभ धैवत वज्र.  
आवरोही सा लोमूर ला.

9/10/60

राग पूर्वि असंपूर्ण.  
रीषभ धैवत कोमल. गंधार. मध्यम. निषाद  
लीश्र. आवरोही मध्यम कोमल लागते. ष. पं. अ.  
वज्र.

राग यमन संपूर्ण.  
आशोही आवरोहीत पाचो मूर लीश्र.

राग यमन कल्याण. साउव आशोही  
साल मध्यम वज्र. रीषभ गंधार धैवत निषाद  
लीश्र.

राग भूप. सोडव.  
रीषभ गंधार धैवत. लीश्र. मध्यम. निषाद वज्र.

शाउव

राग केदार असंपूर्ण.  
आशोहीत रीषभ गंधार धैवत वज्र करून  
गेळे पाहीजे आवरोहीत गंधार वज्र. मध्यम कोमल  
रीषभ धैवत लागते. रीषभ धैवत निषाद लीश्र.

65



शेषम पंचम आरोहीत वर्ज्य आवरोहीत सारणी  
सुर लागलात. आवरोहीत मध्यम कोमल.

34

राग व्या हाग साउ व असं पूर्ण

शेषम आरोहीत वर्ज्य मध्यम आरोही आवरोहीत कोमल  
शिषम गंधार निषाद लीश धैवल वर्ज्य आवरो. साही

राग सींधडा साउ व असं पूर्ण

शेषम लीश गंधार मध्यम निषाद कोमल. धैवल वर्ज्य  
आरोहीत शिषम वर्ज्य आवरोहीत साही सुर लागलात.

राग कोफ्री सं पूर्ण

शेषम धैवल लीश गंधार मध्यम निषाद कोमल.

राग कामोद असं पूर्ण

शेषम गंधार धैवल निषाद लीश मध्यम कोमल.

आरोहीत गंधार मध्यम धैवल निषाद वर्ज्य आ. सारणी सुर

राग साधो सिंजोटी असं पू.

शेषम गंधार धैवल लीश मध्यम निषाद कोमल.  
आरो. नि. वर्ज्य आव. सारणी सुर.

राग पाहाडी सिंजोटी ओडव.

शेषम गंधार धैवल लीश मध्यम निषाद वर्ज्य.

राग माल कोस. ओडव.

शेषम पंचम वर्ज्य बाकीचे कोमल.

राग रवेमाच असं पू.

आ. मध्यम कोमल. व निषाद आरोहीत लीश.  
आवरोहीत कोमल. बाकीचे लीश.

66



मध्यमकोमल निषादकोमल नीत्रदोन्ही

बाकीचे लीत्र.

36

राग परज असं पू.

यांत शीषभ धैवल कोमल. गंधार मध्यमे निषाद लीत्र.

राग रांहरा धर्णे सं.

यांत मध्यम कोमल बाकीचे लीत्र.

राग मांड असं पू.

यांत मध्यम कोमल बाकीचे लीत्र.

राग पिल असं पू.

यांत शीषभ व मध्यम कोमल व लीत्र दोन्ही लागतात.  
गंधार व धैवल कोमल. निषाद लीत्र.

राग रोहनी सांडव-

शीषभ मध्यम कोमल. गंधार धैवल निषाद लीत्र.  
पंचम वेस्ट.

9/10

राग कोलींगडा सं पू.

शीषभ मध्यम धैवल कोमल. गंधार निषाद लीत्र.

राग गारा. असं पू.

शीषभ धैवल लीत्र. गंधार कोमल लीत्र दोन्ही लागतात.  
मध्यम कोमलच. निषाद कोमल व लीत्र दोन्ही.

67

राग रामकली असं पू.

शीषभ मध्यम धैवल कोमल. गंधार निषाद लीत्र.



राग देसा लोडो. ३-१-१५ पु.  
शेषम कोमल लोडो दोन्ही. गंधार मध्यम धैवल  
निषाद कोमल.

राग ललल. साउव.  
यांत पंचम वर्ज. शेषम धैवल कोमल. गं. नि.  
लोडो. मध्यम कोमल लोडो दोन्ही.

राग व्याहारी. ३-१-१५ पु.  
शेषम धैवल निषाद लोडो. मध्यम कोमल. गंधार  
कोमल लोडो दोन्ही.

राग विभास ओउव.  
मंशाच्चाअधाराप्रमाणे शेषम धैवल कोमल गंधार लोडो  
हो गंधार लोडो शेषम धैवल लोडो ठेवून हीं दुसऱ्यांनी लो ग बाप  
धैवल.

राग लि लंग साउव ३-१-१५ पु.  
आरोही आवरोहीत धैवल वर्ज. शेषम गंधार लोडो.  
मध्यम निषाद कोमल आरोहीत शेषम वर्ज.

राग हीं गेल. ओउव.  
शेषम पंचम वर्ज. बाकीचे गुर लोडो.

१५/१०



+ कै सें के टरी सज्जनी करन रानी या ॥ कै ॥  
 मोहे उनवीन दा डो पक कीन व्यांकु कनई वमवीन  
 मोरी उवाकी ॥ कै ॥  
 सनद पीया मोरी मानन नाहिं बार बार म्मेसे कीनी  
 च्यावराई मोरी ॥ कै ॥

+ मधुरासें शाम गो कूकुरी केहरा पीया प्यारे सोचा रहे  
 ॥ म ॥  
 कूबरीन शाम मोहे छीन कीये वीन दरसन नैना तरसरहे  
 कोई सुगर पीयासें उयाय कहो जेबे हमरुं छांड देना  
 केनये ॥ म ॥

+ वीयाकोंसें देखा मारा कही थोउया कागोर उथोर उथोर  
 ॥ वी ॥  
 यादिया वान मोहे दिक्की वागी या देखा वीन ककन पर  
 लसीया उथोर उथोर उमावे ॥ वी ॥

+ कै सें कंदन हीं परान चैन हमे बारी वमीया हो वाकभ  
 राजे ॥ कै ॥  
 च्यांद पीया वीन नीदन आवे मैका पकरवन कागी रा  
 रात राखे, नुहीया हो वाकभ राजे ॥ कै ॥

+ जीवान जय का उगे ये रांरी मेरो ॥ जी ॥ करम की रवी नारे  
 हुई है ॥ मे ॥ बैठ रहा पीया अचने मेहे कुमेरे राभ मीका  
 ओला राखे ॥ म ॥





मोरे करन के उठाने की रा मे - आदर बन बन  
की बारी रा मे ॥ ११ ॥

घबरे गइ मोरी सुख नुन कीरी रोवन के घर बन गये  
ये क प कर व मे ॥ १२ ॥ १७

२५६ ते कुमरी ३६

दिवा दीवाने वर म करि करन के नुन मुने मारो  
मी के काय र रवी मोरुं मन मोहन मार पाटा ॥ १३ ॥  
कीसे मेवा वरी बन बन चढ़त राम रंजित को हुं मे वर के  
आहु कहंगया जो मोर म्भ गुर बाचा ॥ १४ ॥ १८

२५७ तीक क कुमरी ३७

कुम कहना नुन करन को रउयन ॥ १५ ॥  
यरी व रवी मोरुं सुख रहे पीया कोई जो को न कर जो  
मना जो रोवन खे ह भुवा जीय वान करन को ॥ १६ ॥ १९

२५८ ३८

वैयान प कर मोरी नर म क क दिरे कर प कर गइ  
जो की म र क दिरे ॥ १७ ॥

रउयन रउय मेरे ये क हुन मोने क दर पीया को मे दे  
हुवा दिरे ॥ १८ ॥ २०

२५९ रुबंरी

काहेरी न पारु दिया ॥ १९ ॥ मोरे बोलि अब ही न गये बिस्व र  
मरों गीरे ॥ २० ॥

लाउ की मारी कहु कहे ना स क लुहें रू उयो बन कर र  
उयो ॥ २१ ॥

२६०



धनसालगे धनधमंड ३२  
यह राय, (बै) येसावन गमून दोको  
सज्ज बागे दिखौ लाहै बिना भावन  
भावन सुना क्रि से सज्जा खुसा लाहै (दो)

सावन बिरह समुद्र में है जा राज भई कं थ  
लन मन सोखन डूबी है प्रेम खजा कहरं त  
(बै) ये भा दो धन धरु चहराय जो कर कर  
बौर आ लाहै ठणक ओ कक कक बिरह मकी.  
उसे कक सुना लाहै (दो) भां दोरीं भा में न  
भा दो बिरह धरा धन मो ह ~~धन धन~~  
नैन नीर सरवर बहे गर्जित राय क राय, (बै)  
ये आशिन आश पिलमकी भभक चंदा चला लाहै  
मुकरु ह चंदनी बिटकी बदन फोला पडा लाहै  
(दो) आश चिन आषा भा मकी भभक लचक  
चलाय सररु चंदकी - चंदनी लन फोला पड  
जाय (बै)



ॐ सजन ज द सा द आ ला है चंम द र्या बहा ला है  
दो हा बिन देखे देख को लहे देखे सुख मे सा रा  
क हो सखी इन द्वि गन से असुख मे वां बसो है रा  
बौर) मही ना चै ल चमक, सनम काग म स  
ला ला है दम के सुखे द की किने बिरहिनी  
को ल पा ला है, दो हा चै ल चमक पहा दिस  
किरण चपरा सी राहु चाप सा रा रा मा दे ल  
बिरहिनी, किर धा सो धन धाम, पैर.

ये बौ साख बिन सजन ये ख स खो ना सा ला  
ला है औ पंदा पंदनी पंदन बदन  
चिनगी ल गा ला है दो हा, करो साख  
बै साख मे ख स डाल सी ल ल गे हु, पंदा पंदन  
पंदा नी ल ब हो ज ला व ल दे ह (ले १)  
पुरु है जेठ का ल पना, न ही आपना कुच  
बसा ला है ना आ सा आ ज ल कु का ब ह  
जो <sup>खुब</sup> ~~कुच~~ ख बरी स ना ला है दो हा

ला ग्यो - जेठ ल पन सखी जे स मु द ग री  
भुलाय का सि द ह स पनो भयो आपनो  
का हा ब सा स, ॥ पैर) ये अस द बिन  
सा जन म द न ल न को ज गा ला है, उम ड  
पन धेर द ल बा द ल सो ह म प, औ ज ला  
ला है, ~~बिरह~~ दो हा) बिरह बा ठ आ म  
ठ की प रे गा ठ मे प्रान



२२

उबवगुलो प्रेमका सोलिनका चंदो अकां ॥  
लिनका लिनमे जायमिलो सोलिनका लिनके  
पांस ॥ ३॥

दोहा

२४३

कनक मढकर नर्म हो ओर दला सीस  
भोपाल वानन देखिये हाल की  
अंज पृथका बाज ॥ ३॥

दोहा

२४४

अज्जामुलने मेकहों सोलबहि करयो सीस  
मेनाने मेनाकहों सो मोलहुवा दस बीस ॥ ३॥

२४५



॥ श्रुतिव्यं चैव षडङ्गस्य निषादसंश्ले

॥ नैदा ॥ सकाकली मध्यमन्य गांधारुत्त

॥ नमः स्वयं ॥ १५१० ॥

1.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$   
 2.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{8}$   
 3.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$   
 4.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{16}$   
 5.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{32}$   
 6.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{32}$   
 7.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{64}$   
 8.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{64}$   
 9.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{128}$   
 10.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{64} = \frac{1}{128}$   
 11.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{128} = \frac{1}{256}$   
 12.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{256}$   
 13.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{512}$   
 14.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{512} = \frac{1}{512}$   
 15.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{512} = \frac{1}{1024}$   
 16.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{1024} = \frac{1}{1024}$   
 17.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{1024} = \frac{1}{2048}$   
 18.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2048} = \frac{1}{2048}$   
 19.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2048} = \frac{1}{4096}$   
 20.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4096} = \frac{1}{4096}$   
 21.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4096} = \frac{1}{8192}$   
 22.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8192} = \frac{1}{8192}$   
 23.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8192} = \frac{1}{16384}$   
 24.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{16384} = \frac{1}{16384}$   
 25.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{16384} = \frac{1}{32768}$   
 26.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{32768} = \frac{1}{32768}$   
 27.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{32768} = \frac{1}{65536}$   
 28.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{65536} = \frac{1}{65536}$   
 29.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{65536} = \frac{1}{131072}$   
 30.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{131072} = \frac{1}{131072}$   
 31.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{131072} = \frac{1}{262144}$   
 32.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{262144} = \frac{1}{262144}$   
 33.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{262144} = \frac{1}{524288}$   
 34.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{524288} = \frac{1}{524288}$   
 35.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{524288} = \frac{1}{1048576}$   
 36.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{1048576} = \frac{1}{1048576}$   
 37.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{1048576} = \frac{1}{2097152}$   
 38.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2097152} = \frac{1}{2097152}$   
 39.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2097152} = \frac{1}{4194304}$   
 40.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4194304} = \frac{1}{4194304}$   
 41.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4194304} = \frac{1}{8388608}$   
 42.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8388608} = \frac{1}{8388608}$   
 43.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8388608} = \frac{1}{16777216}$   
 44.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{16777216} = \frac{1}{16777216}$   
 45.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{16777216} = \frac{1}{33554432}$   
 46.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{33554432} = \frac{1}{33554432}$   
 47.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{33554432} = \frac{1}{67108864}$   
 48.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{67108864} = \frac{1}{67108864}$   
 49.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{67108864} = \frac{1}{134217728}$   
 50.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{134217728} = \frac{1}{134217728}$   
 51.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{134217728} = \frac{1}{268435456}$   
 52.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{268435456} = \frac{1}{268435456}$   
 53.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{268435456} = \frac{1}{536870912}$   
 54.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{536870912} = \frac{1}{536870912}$   
 55.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{536870912} = \frac{1}{1073741824}$   
 56.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{1073741824} = \frac{1}{1073741824}$   
 57.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{1073741824} = \frac{1}{2147483648}$   
 58.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2147483648} = \frac{1}{2147483648}$   
 59.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2147483648} = \frac{1}{4294967296}$   
 60.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4294967296} = \frac{1}{4294967296}$   
 61.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4294967296} = \frac{1}{8589934592}$   
 62.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8589934592} = \frac{1}{8589934592}$   
 63.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8589934592} = \frac{1}{17179869184}$   
 64.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{17179869184} = \frac{1}{17179869184}$   
 65.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{17179869184} = \frac{1}{34359738368}$   
 66.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{34359738368} = \frac{1}{34359738368}$   
 67.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{34359738368} = \frac{1}{68719476736}$   
 68.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{68719476736} = \frac{1}{68719476736}$   
 69.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{68719476736} = \frac{1}{137438953472}$   
 70.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{137438953472} = \frac{1}{137438953472}$   
 71.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{137438953472} = \frac{1}{274877906944}$   
 72.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{274877906944} = \frac{1}{274877906944}$   
 73.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{274877906944} = \frac{1}{549755813888}$   
 74.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{549755813888} = \frac{1}{549755813888}$   
 75.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{549755813888} = \frac{1}{1099511627776}$   
 76.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{1099511627776} = \frac{1}{1099511627776}$   
 77.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{1099511627776} = \frac{1}{2199023255552}$   
 78.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2199023255552} = \frac{1}{2199023255552}$   
 79.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{2199023255552} = \frac{1}{4398046511104}$   
 80.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4398046511104} = \frac{1}{4398046511104}$   
 81.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4398046511104} = \frac{1}{8796093022208}$   
 82.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8796093022208} = \frac{1}{8796093022208}$   
 83.  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8796093022208} = \frac{1}{17592186044416}$   
 84.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{17592186044416} = \frac{1}{175921$

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

वि. ७५॥ वि. ७५॥ वि. ७५॥ वि. ७५॥ वि. ७५॥

11. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160.

(सुभाषचन्द्र बोस) के अन्तर्गत है।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ मे वै रश्मिः फला ॥ कला द्वाधा च भु भागः

॥ स एव प्रोच्यते भूतिः ॥ २॥ चतुर्भागात्

॥ नैव विदो र धीं प्रकीर्तितं ॥ आमुदधा

॥ हुनः प्रोक्तो हुना भ्यां जायते लघुः ॥

॥ लक्ष्म्याय नमः ॥ इति श्री लक्ष्मणेन च पुनः ॥  
॥ स्मृतः ॥

॥ स्म. नः ॥

9/10

14

74



॥ ५० ॥

॥ श्री गुरुः ॥ ॥ श्री गुरुः ॥

१८ दिवस एकमात्र ही मरकातः ४ मात्र

क. ल. एकमेका अकलाकाल १२ माभा.

लिख. एकमेका दोन प्राक 3 मा.

नवंबर. एक ओझा. चार काल. ५ ॥ १०

7/2/00



- ॥ अस्माद्विवक्षमाणोऽयं मनः प्रेरयते ममः ॥ देहस्थं  
 ॥ वन्ति मातुंति सप्तेरयति मारुतं ॥ १॥ ब्रम्हः गंधि स्थितः  
 ॥ सोऽथ क्रमाधूनं दुर्ध्वं पथे चरन् ॥ नाभिं हृत्कंठं  
 ॥ मूर्ध्नि स्ये वा विभक्तिं जले ध्वनिम् ॥ २॥  
 ॥ व्यवहारेऽसौ त्रेधा हृदि मंदोऽभिदीयते ॥  
 ॥ कंठेऽथो मूर्ध्नि तारो द्विगुश्चोत्तरोत्तरः ॥ ३॥  
 ॥ तस्य द्वाविंशतिर्भेदाः श्रवणात् श्रुतयो मताः ॥  
 ॥ हृद्यूर्ध्वं नाडी संलग्ना नाड्यो द्वाविंशतिर्मताः ॥ ४॥  
 ॥ तिरश्चः स्नायुता वयः श्रुतयो मारुता ह ते ॥  
 ॥ उच्यते चतसरा मुक्ताः प्रभवंत्युत्तरोत्तरं ॥ ५॥  
 ॥ एवं कंठे तथा शीर्षे श्रुतिर्द्वाविंशतिर्मताः ॥  
 ॥ श्रुतिभ्यः स्युः स्यरा षड्जर्षभां धार मध्यमाः ॥  
 ॥ पंचमोऽथैव तश्चाथ निषाद इति सप्तते ॥ ६॥  
 ॥ श्रुत्यनंतरभावीयः स्निग्धो नुरणनात्मकः ॥ स्यनोरंज  
 ॥ यतिः श्रोतुं चित्तं स स्वर उच्यते ॥ ७॥  
 ॥ स्यराणां निचयोगासौ मूर्ध्नि नादेः समाश्रयः ॥  
 ॥ भरतेनोदितौ शास्त्रे ग्रामौ द्वौ षड्जमध्यमौ ॥ ८॥  
 ॥ क्रमात् स्यराणां सप्तानां आरोहोऽप्यारोहणात् ॥  
 ॥ मूर्ध्नि तेऽप्युच्यते ग्राम द्वयेताः सप्तमसप्तच ॥ ९॥  
 ॥ तौ द्वौ धरातले तत्र षड्जग्राम आदिमः ॥  
 ॥ द्वितीयो मध्यमग्रामः तयोर्लक्षणमुच्यते ॥ १०॥  
 ॥ षड्जग्रामः पंचमेव चतुर्थी श्रुतिर्न स्थिते ॥  
 ॥ सौपात्यश्रुति संस्थे स्मिन् मध्यमग्राम इष्यते ॥ ११॥  
 ॥ यद्वाधश्चि श्रुति षड्जे मध्यमे तु चतुः श्रुतिः ॥  
 ॥ रिमयोः श्रुति मेकैश्च गंधारश्चेत् समाप्तिश्चित् ॥ १२॥  
 ॥ पश्रुतिं धो निषादस्तु धश्रुतिं स श्रुतिं स्थितः ॥  
 ॥ गंधारग्राममाचष्टे तदा तं नारदो मुनिः ॥ १३॥ प्रवर्तते  
 ॥ स्वर्गलोके ग्रामौ द्वौ षड्जमध्यमौ सौ नमं हु  
 ॥ तले ॥ १४॥







117215

॥ ॥

मौच १०१ निचे भयी गं गा उपर वसे कासी  
मधु बल की चिहं गं बोलो बि र प्र बि कासी रो ॥ १॥

॥ १० ॥ गङ्गा नदी प्रवाह, गङ्गा नदी प्रवाह

\* मै ज्ञान निशी पर्या से अध्या न ही को जी ये बात  
गल न है कभी दे खान ही को जी ॥

शबरन्नाबमै बिलकलको किशा ला नह वेग  
प पौ के दिवा हरन मे बाला नही के। श्री १११॥

माला मन्त्री विद्या देवा है आमा की हस्तिसिद्धि है  
॥१॥ अथर्व वेद सप्तम स्कंध कौटिल्यी के श्री गुरुभ्याम्

एक जगत् ही है दुख दुःख ना दि लेना  
 काम हमावा गोधा के म डे क र डने का  
 उभा कानि ही को सीता उभा मेरा निज ही ली रवी  
 जो लेना का योगी के कि निम ही के की  
 नि को मि हा ला न ही के थो ॥ ४ ॥

78



५९

१ वाजे श्री ॥

धीमाते. २८५

आयोउलमलमलवा रो पीहवा भोरही आहामह  
आनजगा यों सोलन सगेरी रैननहो आगे ॥ १ ॥  
आलसाबी आखिया पै धानी हरसपियो सोहे जानत  
ह सोलननिस जुगो ॥ ३ ॥

५९



X 91/8

मैने नही ठहरी

94

220

भाई ने लगेरी सबसे लठ पटी च्याल माने  
 मदे को रनर सुम ल उम ये न द ला ला ॥ १॥  
 है न बीन गदु के न कैल वर सिव ज न बिच  
 ने दूर भू द गयो आ धुन न च्यु द हरे मुनव  
 अंग जन गा ल ॥ १॥

व्याहारी 221

दर न के से पाव मोरी आली को न ज लन कन  
 धरी पल दिन मो पे भा री पि या बिन ॥  
 उ न बिन बि र हा स ला ये न भा वे पु ज बि र द न के  
 क ध ना सु हा वे मो री स ज नी ल र प ल र प  
बी ल ल न न द मो हे आ ब नि स दि न द र न

X राग पील. होरी. 222

डार दी यो मो पे रंग ही मो री अंगी या चु न री या  
 भी ज ग द स ग री. ॥ हो ले ना बो ली ला ज को  
 मारी. जा त र हो या के द ग ही मो री अंगी या  
 भी ज ग द स ग री. ॥

X 91/8

होरी 223

ले वी ब न ती कर त हो ना मा रो पि च का री का न त स ग  
 री चु ना री यां भि गि मो रि का हे कर त ब र जो री का न ॥ १॥  
 दे ख त है स ब स ग की स हे हो ना त र दे वु गी गारि का  
 न ॥ २॥



देखि ऐसी चतुरना र उगमगपग धरु लजाल  
 चाल लाले देखि वाकी हमसो पगथर थाल ॥  
 अंग से जो बन चुवाल मुख सो राखी हल जाल  
 वाकी छब देखि सनद सगरी छब भू लजाल ॥१॥

राग तिलक का मोद.

मुमदी २५०

हसिन कैसे पाव मोरी अली को न जालन अरु  
 दारिपल छिन मो पे थारी पि पा बिन हसिन ॥  
 मन बिन बिहा सलतैन भावे मुज बिह हन को  
 कछु ना मुहा वे मोरी राजनी लरप लरुप बीतत  
 नंद मो हे आबो निस दिन ॥ १॥

राग भैरवी. २५०

एनी का सी लगी चा वे नै ना दिधानो का ॥  
 चान भुरे नै ना दि दिगी ला खन गल में ही पुधी  
 के नू मे आखा सिंह मुगी मुगी हन दिल दख भर दे  
 मे खडी नगर हू का वे नै ना दीधानो का ॥ एनी.

२५० भैरवी. गजल ११. पोछो.

अज अजल दा रं लव जो सुवेतो. च भवा कर्द बहने  
 कवेतो. ॥ सदब का आरद बजाने आषका सी लसी ले  
 गुंनानि से जे सुवेतो ॥ १॥ सगरी अज भो प पोरी दा  
 दा पेश मे हरे न र्ग से जादवेतो ॥ सर्व मे जुं बदु  
 से डे ने जोर ॥ अज हावा से काम ले दी ल सुवेतो  
 ॥ ३॥



लीखे नैना चितवत कोहे मारत जान बह जोरी  
 जान कोरे कोरे दृगरत नावे कुटिले भव  
 धन कवान ॥ ध्यांद कहत हर मो हनि मूरत  
 बनसि याव जाये हरत प्रान ॥ १॥

रुमरी मि. ध्यांद की

परत

२२८

चलो हरो जान मो मो बो लोना लोहे जान लो  
 अल हो न टखट ॥ रैन गभावे भोर भये आये  
 लोहे लाग रही सोलन कि चटक ॥ १॥ च. १२

२२९

रागलच्छाभाग ताल ब्रह्मसोदा

ये बन भाली बन बन ओरे लूं न लभा ॥ १॥ चेर घने रे लूं  
 मल न्याये गवार गवार ॥ १॥ ये बन ॥

बै बावली ला. सवा रो

३००

आ लो रो मै जागी सगरी रैन नाही आये  
 पि या लीरी ॥ हर सपिया को आवि या लन स  
 र हो हे का बि द स खो जि या सगरी रैन नाही आये



94

साग पाहाती जिंजोटी

२२४

साही वे छे कावामनुवां करुवा न वि छे का  
 वामनुवां ने रेको हल आया पिलार जोरी  
 साहा होरा ही ने ५ जोरा जोरी यो दा ॥  
 आनुवे दे हट गोरी खरी करु को ही  
 कंथनामि अथा साही जोरी धां दा ॥१॥  
 के के धरो आये ही पामि राने च लिथां  
 पानीर शरु लाई थं रे ना लुवे दा हो वा सेवे  
 ॥२॥

साग पाहाती जिंजोटी

दृष्ट आनक रे ही पीर नी मे रे आमि धरा ५-या  
 देवे नडा रा साफ करो लफ बा री नी  
 सागा मे साध दे हा दे करु मे इंग रा लां दी ही  
 नी मेरे ॥ आ मने के गे गे आ जे हा ना आ ये  
 मनम ही बांधे धीर नी मेरे दे दे ॥

२२५ पाहाती जिंजोटी.

हो राज दे दे नो कर आ से नी गोरी से हा रा ज.  
 दे व जी मंग दे सी ते रा हो रा ज ॥  
 दे व जी होरा भा दे दे वुं जी धो रे दे व रा. कंथ न ही  
 धर मे रा हो रा ज ॥

१/१/८०

58

83



॥ श्री ॥

राग चै ला गेरी २०१

92

येरी हो लो आसन गैली पास न मे ली कगना  
द रे मे को नाम ॥ जब से पिछा पर दे स गई लवा  
~~सुर नारदा पर आव न की १ उहेरी नो दी नो पाय ॥ १ ॥~~

9/10

28

84



॥ श्री ॥

श्री राग

१३

+ लागो ही आवरे

ये सो हो लो असा न गे की पा सान गे की  
कु गुवा द रे मे के ना मा सो रि ॥

१४

85



१५  
X धावगरी सुभआजमहुरलसधमिल गानोवधा  
वन बसो लोकी मबारकीं ॥ जीवहु जागहु  
कोटब रसदा रोगमोमदसा गुनिजन के  
गुनपारखी ॥ ३॥

लराणा धे. ले.

११७ ३०३  
X देदे दे दे लननन. दे रे ना लदरे दानी. दे दे दानी  
ल दे दानी. दे दानि दे दानि दानी ल दे दानी. वे दानि  
निल दे दे दे दे लननन. लपारे निलारे लना रे.

ल दे दानी ॥ नादिर दिर दिरादुरादिर  
लननननन. धाकिट लकधिर किट लक

नगविरकिट लिर किट लक लननननन. दिर दिर  
दिर लननन दलनन दलनन लदरे लदरे ल दे दानी.

ल दे दानी धाकिट लक धाकिट लक गिगनगधा.  
गदिगनधा दिर दिर दिर दिर धा. नादिर दिर दिर  
धा लक धा धा धा नकिर किट

नगलिरकिट लक धा नगलिर किट लक धा  
नगलिर किट लक धा ॥ ॥ ३॥



३०४

मा ते दे वरिहा सा जाव दो लन सां दे ना ले  
ग ला करे रावे मा ॥ सद के की ली जिते व  
ति सब ल जिते लु आवना य ल दिरवे मा ॥

३०५

अरे मन को हे कु रोच के रे रे ॥ सोय अरे  
क धु बन न ही आवे धी र स्त ज्यो न धरे ॥ ३१६

३०६

ये द रू न सो न ये मन ज र म बे नि पा ज द यी ॥  
ब हे र लं म के आ उ न्ब ली र वे क मा ज द थी ॥

३०७

ये मै बू ब पी र च सगी ह ज र त सु ल लान न सा मु  
ओ ली सा ये मै बू ब ॥ कर लारे आपी ब ना ये  
नूर ले मामूर सूर त रू व ये ये मै बू ब. ॥

३०८

ये क ल स जो गई सि आ ली पि या मि ल कु धा र  
भू ल गई हूं आप नी सु द मे क म ला ज रा हि  
आ ग रू प सो री ला मां दे वे वा के सा ल हू हे री  
भई सि

३०९ आज भोला ला.

साली दु ठ ही रे मै दी ला व न आ ब सो री रे  
रों ग ॥



राग पूसाधनाश्री

390

बल बल जावु दिनालो रे या नगरी के लोग भुरे  
लेचल दिसेवा मायी सदा रंग पाधे परे भग रे  
कबल ॥

मी 2 गुग 44  
गुग 44 गुग 14

3 आरे मन कोहे कु सोच करे ॥ सोच किये से  
क्या हो लहे धीरे उनको ना धरे ॥ १ ॥

10/11/19

राग पूसाधनाश्री  
राग पूसाधनाश्री  
राग पूसाधनाश्री



312 रागमालसरी.

(15)

जो बन्न न वे धुवे दासरी नवन करन बा ये लागी  
ओर जां दावे ॥ इष्क दी बाये लारी मुझ दी बी  
मा ही सदा रोंग ओर लो.

396 2 ल. लिलवाडा

ननननन ठ म के पगपाड यलबीजे ॥

39/3/50

हते हारे अनुवर किछुवा धुंगन बीजे इनडन ॥

3. 395

उडे डरे न तुं स्यां डेना छ लारगे ड ड ड ड ड ॥

न बीं डरे लु स्यां माडा अराड रोंग ॥

OP

89



राग मा. वा. ३३

पनधरवा केरे भरनन जाव मायी ही  
बीच हो हो रो के रही ला ॥ धरे ते नि करन  
मायी दवर भयी ला आव का हा कि जि ये  
को न सर लने ॥ १॥

३१२

आवहु लो कर सागर वा मा ही. देखन को पियन  
कादने ॥ बरवत की काहसन उरे परे स  
ले ले हू लन सो लन.

लला ला ३१३

का ह कि दीन का ह करे नरे वरी गीत मो  
वा जो को ह करे नरे अपने मन को ॥ वी  
लन रंग लु मको मेहे रवाना सब के  
सदा बंगवार साओ ॥ १॥

लला ला ३१४

का मे कुवर वा जां हू ल हा मरा. मो रे हर वा ना धन धर के लन

धा मा ले ३१५

बो लन विन क वहु चैन हि परल पी हर वा जो ना हे न स उओ  
॥ ओर न से तु म थ ला पी ल को मन के वंगी ले ह मे वा  
ना सु ना वों ॥ १॥

१४

९०



रागमुक्तानी

४४

३२४

गोकुल गान्धो छो सारे बरसाने की नार ॥ गो. ॥  
इन दो उमिल मोहे लथीरे भयी सदा रंग ने लाल ॥

३२५

जा को मन आला मों ग रहे जैसे पास पास नरद  
फिरे ॥ चलो देखो सखी बे को न हे हजरत ख्वाजा  
मीर दरद जा को मन ॥ १॥

३२६

भवर वाह बे लबसे की नोरी. भवर ॥  
आपने बा री मे भवर ल भानो मे हे रबा न सु.  
कबु बे ना मेने ह कबु गी ॥ १॥

३२७

क व न दे स गई ला पिछा मो रा रे लु गु वा मै लो वा ड के वे  
स के बल हारी कवन ॥ उन बिन सदा रों ग के से भोर  
दिन बीत गये जु गु वा कवन ॥

लेख चवा के इलनां.



99/13

312 होरी रवाँ

ना दे या मे अगबना जावो द द बे च न से  
बी च मे ग जे द द के छि ने या ना ॥ १ ॥  
ना व ना जा नो गा व ना जा नो अगे लो बिज के  
व से या ॥ ना ॥ ॥ रवाँ 320

अव मोरी सो निया को बिज कार सुन निन नदि  
उता से के रे कर आवु मि पुवा लो रे पल्लु

धं मार सुधरा 33

329

+ कान लुम हाहा कर छु टे हो मोहन आज वोइ  
छेकी ने ॥ इत नो ही मे भुलग ये लुम निपव  
सरा रंग भी ने ॥ ॥

322

होरी रवाँ

अन आरे स रिपे नंद मे ह के मे राव ससा को राव  
रंग सो रो ॥ सर्व न सुनत भुल की की अन क आर  
वा भुल के भुल के अंग हो राव ॥ ॥ ॥

काफी 323 रवाँ

ओ हो रे अगे के बिपजारी लुस भुल के यवा पिपका  
कोम ॥ वा द न्य लल रंग रा दियो मे भुल के अंग  
लन सो सी सासन नदि वा लो पिहि सु सो जाव  
सा री रा रा द साव मे सो कल दो कल दो कल दो कल  
वे दुरी 18 अ हि के मल रा ॥ मो छी न तु गी क न

18

90



बा ल म त र गै यार ती र खा न वे कर म दानी  
भ ला वे ॥ को उ कि सु दा वारी वे हा न वे की सु  
दा मु ज वे नि माणी दा आ ला वे ॥ वा ॥

३१६११. ३२२

ल च क ल च क च्चा ल च ल ल आ व ल है नं द हूं व र



॥ धी मा ले ला ला राग प ला स ॥

ठो ल न में डे छ र आ वी सो ना भी आ लो में बी ले डे  
स ह के सा व ॥ मुख वे खां लो में जि वा स दा रं गी  
ले द र स जि न पा वी वे ॥ ठो ॥

११



ये रीसखी के से के मिलना बने गो.  
उन बिन मोरा जि या बोरा ना ॥ जब से गये  
मोरी सु दहना लीनी किन दालि या न बिम भायो  
॥ १॥

94

SP



ब्याहा गजीवाल पद तुलसीदास रवौ न. पे.

३३२ तैलाला

आज रहौ मेरे प्यारे रघुबर ॥ आज किरे  
रहौ मेरे प्यारे ॥ प्रानहि होय सवारे ॥ १ ॥ ३॥

मै कैसे रह भोरो माय को सल्ला ॥ दनारय बा  
हारे ॥ १ ॥ नव दस मास गरब मोखे लौ उना  
भये मोहें आरे ॥ मेरे सी ललन दोउ  
धन को सी धावे ॥ मेरे अविचयन के लारे ॥ १ ॥

३३३ राग बिलावल. तिलावा. रवौ न. पे.

समरन कर भज राम नाम को जो कुछ भल  
होवें ते सबंदे ॥ एक दिन वाधा जान हों गा  
सच समझ अपने ग्यान ध्यान कीं ॥ २ ॥

३३४ राग मुल्लानी तिलावा. रवौ न. पे.

श्री रामा लोक लारी कर लारी रामा लो ॥  
प्रान के जीवन पुरन गांवा सुंदर आशीला मे वल  
जावा ॥ सुख पांवा अनंद भइल वा पिशाके  
आवन को करम कियो भगवाना ॥ ३ ॥



७  
साँस साँस वंदन वंदन के साँस मोँस दन दीपन  
मन रौंसा जन काँस जाल छीपेरें ॥  
निक सीक सुँसा हर लाँस कहे लाजल  
इश्राही म मुख चँसुँस छके रे ॥३॥

३९/३

पूयादिना श्री सपला जा.  
३३५

पाँस र कहे अनजर नी नाव मेँसा री  
आयाँस मेँ दुर सेँसा मन दाहक लेँसा री  
॥ दोन दुनियाँ मेँ नम लेँसे लेँसे ना म  
रोषन. हुँ द ~~नम~~ का पीर रब्बा जा अज मेँरी  
३३६

३९/३

३३७

पूया लिलावा

धारियेँस गिनल जाँस ल लेहारे मोलन  
कीँसाँस अज म ॥ धरी पल छीन दोन  
रैन हाटी लें जोँस को घट मेँसाँस लाँस म  
॥३॥

३९/३/८

३३८

शंकरा. लिलावा.

पीहर वाँसाँसाँस असाँस मैकेँसर  
लाँगेँसाँस एँसाँस लाँगेँजिन

मोसाँसाँसाँस ॥ लेरो रंग दंग सब कोँरे  
जाँस ने मोँसर साँसाँस जोना केँने कोँसाँसाँस  
मोँसाँस ॥३॥

९६